**भारत सरकार**

**कृषि मंत्रालय**

**कृषि एवं सहकारिता विभाग**

**\*\*\*\*\***

**राज्‍य सभा**

**तारांकित प्रश्‍न संख्‍या 143\***

**23 मार्च, 2012 के लिए प्रश्‍न**

**विषय : जलवायु में हुए परिवर्तन का प्रभाव ।**

**\*143 श्री मोहम्‍मद अली खान** :

क्‍या **कृषि मंत्री** यह बताने की कृ‍पा करेंगे कि :

**(क) :** क्‍या फसलों की बुआई संबंधी समय-सूची का पुन: समायोजन करके जलवायु में हो रहे परिवर्तन को निष्‍प्रभावी बनाने के लिए कृषि-कार्यों में मशीनों का उपयोग किया जाना अपरिहार्य हो जाता है;

**(ख) :** यदि हां, तो तत्‍संबंधी ब्‍यौरा क्‍या है; और

**(ग) :** इस संबंध में क्रमश: किसानों, उद्योगों और सरकार का दृष्टिकोण क्‍या है ?

**उत्‍तर**

**कृषि मंत्री (श्री शरद पवार)**

**(क) से (ग) :** विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है ।

**-2-**

**राज्‍य सभा में ‘’जलवायु में हुए परिवर्तन का प्रभाव’’ के संबंध में श्री श्री मोहम्‍मद अली खान द्वारा पूछे गए तथा 23.03.2012 को उत्‍तरार्थ तारांकित प्रश्‍न संख्‍या 143 के भाग (क) से (ग) के संबंध में वि‍वरण ।**

**(क) से (ख) :** जी हां । मानसून के प्रारंभ में विलंब, लंबी अवधि तक के सूखे, अनियमित और अननुमेय वर्षा के पैटर्न, तापक्रम परिवर्तन जिसके कारण बोआई, कटाई आदि जैसे कृषि कार्यों हेतु उपलब्‍ध समय में क‍मी आ जाती है, जैसे जलवायु परिवर्तन के संभावित प्रभावों के परिदृश्‍य में कृषि यंत्रीकरण, कृषि कार्यों की समयबद्धता सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य हो गया है, ताकि संभावित उपज हानि से बचा जा सके । यंत्रीकरण खेतों की तैयारी, बोआई, सिंचाई, थ्रेशिंग आदि जैसे महत्‍वपूर्ण कृषि कार्यों का समय पर पूरा होना सुनिश्चित करता है ।

जलवायु परिवर्तन से वर्षा के दिनों में कमी आ सकती है । इसप्रकार गेहूं हेतु उपलब्‍ध बुआई समय कम हो सकता है । श्रमिकों की कम उपलब्‍धता की पृष्‍ठभूमि में अल्‍प समय में धान को रोपने के लिए किसानों को यंत्रीकृत पौधरोपण अपनाना होता है । इससे न केवल कृषि कार्यों में समयबद्धता बनी रहती है अपितु मैट टाईप नर्सरी तथा चरणबद्ध चावल गहनीकरण (एसआरआई) प्रणालियों को अपनाकर अधिक उत्‍पादकता भी सुनिश्चित होती है । इसके अलावा, पुन:समायोजित धान रोपण द्वारा अनुसूची का शीघ्र अनुकूलन उपयुक्‍त कृषि यंत्रीकरण पहले की धान की फसल की यंत्रीकृत कटाई करके तथा गेहूं के बीच की बुआई के लिए जीरो टिल सीड् ड्रिल का उपयोग करके गेहूं की समय पूर्व बोआई में भी मदद करता है । पद्धतियों का यंत्रीकृत पैकेज न केवल भूमि की जोताई में समय और लागत की बचत करता है अपितु ग्रीष्‍म के संभावित प्रारंभ से पहले गेहूं की फसल की कटाई में किसानों को सक्षम बनाता है और इस प्रकार अधिक तापक्रम के कारण जलवायु परिवर्तन से उपज की हानि को बचाता

-3-

है । बड़े पैमाने पर कृषि यंत्रीकरण जोताई, बोआई और कटाई जैसे श्रम गहन कार्यों हेतु कृषि मजदूरों की कमी के मामले का भी समाधान कर सकता है ।

**(ग) :** किसान कृषि यंत्रीकरण के मूलभूत लाभों से अवगत है । राज्‍य और केन्‍द्र सरकार के सतत प्रयासों और किसानों के बीच अधिक या जागरूकता ने जीरो टिलिंग, कटाईऔर चावल के पौध रोपण में यंत्रीकरण अपनाने में तेजी ला दी है । कम्‍बाईड हार्वेस्‍टर,राईस-ट्रांसफ्लांटर और जीरो टिल सीड ड्रिल किसानों के बीच धीरे-धीरे लोकप्रिय हो रहे हैं, क्‍योंकि ये न केवल कृषिलागत बचाने अपितु परिवर्तनशील फसल बोआई कार्यक्रम के प्रति अनुकूलन में भी उनकी मदद कर रहा है ।

उद्योग कृषि मशीनरी और उपकरणों की स्‍वदेशी, कम लागत दक्षता से तैयार की गई डिजाईन के साथ आगे आए हैं । उदारीकरण के बाद तथा मशीनों के प्रोटा-टाईप के विकास के साथ हरियाणा, पंजाब, राजस्‍थान, मध्‍य प्रदेश और उत्‍तर प्रदेश जैसे राज्‍यों में कृषि मशीनरी तथा उपस्‍करों के निर्माण कार्य का विस्‍तार हुआ है । कम्‍बाइड हार्वेस्‍टर, जिसकी कीमत सेल्‍फ-प्रोपेल्‍ड कम्‍बाइड का केवल 25-30 प्रतिशत है, स्‍वदेशी विनिर्माताओं का एक अच्‍छा अविष्‍कार है । यह मशीन किसानों द्वारा व्‍यक्तिगत रूप से रखी जा सकती है । राईस-ट्रांसफ्लांटर, कम्‍बाइड हार्वेस्‍टर, लेसर लैण्‍ड लेवेलर आदि हेतु कस्‍टम हायरिंग सेवाएं खासकर दक्षिणी राज्‍यों जैसे कुछ राज्‍यों में लोकप्रिय हो रही है । कस्‍टम हायरिंग सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए राज्‍य सरकार प्रारंभिक सहकारी समिति तथा ग्रामीण उद्यमी है ।

\*\*\*\*\*\*